विख्यात किडनी रोगों के विशेषज्ञ और किडनी प्रत्यारोपक डॉ. पंकज आर. शाह जी की जीवनी पर आधारित पुस्तक "जज्बा-ए-जिन्दगी" के विमोचन समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (१९ अक्टुबर, २०१८)

- डॉ. पंकज शाह से मेरा परिचय कुछ महीनों का ही है। लेकिन इस कम समय में भी हमारे बीच में एक आत्मीयता की भावना पैदा हुई है। वे बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं मगर साथ-साथ में किडनी रोगों के विख्यात डॉक्टर हैं और विशेषज्ञ हैं।
- डॉ. एच. एल. त्रिवेदी जी के हाथों तैयार हुये डॉ. पंकज शाह के बारे में जानकारी देने के लिये ही "जज़्बा-ए-जिन्दगी" पुस्तक की रचना हुई है। मेरे दृष्टि से इस पुस्तक के मोटे तौर पर दो विषय है – डॉ. पंकज शाह के जीवन के पहलुओं का वर्णन और दूसरा विषय है किडनी रोग के बारे में आवश्यक जानकारियां। इसलिए मैं समझता हूँ कि यह पुस्तक बहुत ही मूल्यवान है और इसके लिये रचनाकार मधुजी भी बधाई की पात्र हैं।
- डॉ. पंकज शाह लगभग ३६ वर्षो से किडनी के मरीजों के प्रति समर्पित है। उन्होंने बड़ी संख्या में किडनियों का प्रत्यारोपण किया है। उन्हें डॉ. एच. एल. त्रिवेदी जी का सांन्निध्य और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है और उनसे उन्होंने बहुत कुछ सीखा भी है। इस पुस्तक को पढ़ते हुये मुझे लगा कि एक डॉक्टर के लिये सिर्फ professionally efficient होना ही पर्याप्त नहीं है। उनके लिये technical efficiency या professionally efficient होना तो जरूरी है ही

मगर उसके साथ emotional efficiency का होना भी बहुत जरूरी है। मैं मानता हूँ कि यह emotional efficiency डॉक्टर और मरीज के बीच सेतु का काम करती है । इसके अभाव में मरीज और डॉक्टर के बीच भावनात्मक रिश्ता हो ही नहीं सकता।

- डॉकटरी का व्यवसाय ही ऐसा है जहां डॉक्टर के पास रोग से ग्रस्त दु:खी व्यक्ति आता हैं । डॉक्टर अपनी व्यावसायिक क्षमता के बल पर उस रोगग्रस्त व्यक्ति के रोग को दूर करने का प्रयास करता है । मगर इस दरम्यान यदि डॉक्टर उस मरीज के प्रति भावनात्मक संवेदना रखे तो मरीज ओर डॉक्टर के बीच संवेदना से भरा एक रिश्ता जुड़ जाता है। ऐसे रिश्ते जुडने में डॉ. पंकज शाह बहुत सफल रहे हैं और इसका एक नमूना हमारे सामने मधुबहन और डॉ. पंकज शाह के रूप में है। डॉ. पंकज शाह की patient मधुबहन ने यह ग्रंथ लिखा है जो हमें यह दिखाता है कि डॉ. पंकज शाह साहब के व्यक्तित्व का एक मानवीय पहलू भी है।
- इस पुस्तक का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यहाँ किडनी रोग के संबंध में बहुत सी महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई है । कई बार रोगी अपनी बीमारी के बारे में भी डॉक्टर को ठीक से समझा नहीं पाता है । इसीलिए यह आवश्यक है की रोगों के बारे में आम लोगों को भी जानकारियां मिलें । यह काम डॉक्टरों के विभिन्न संगठन भी कर सकते है। यह काम मीडिया भी कर सकता है। यह काम सरकार भी कर सकती है। मैं मानता हूँ कि ऐसी जानकारियां बढ़ें इसकी आवश्यकता है। हमारे देश में किडनी के जितने रोगी हैं उनकी

तुलना में किडनी रोग के विशेषज्ञ बहुत ही कम है । इसलिए यह भी आवश्यक है कि देश में किडनी विशेषज्ञों की संख्या बड़े।

- बताया जाता है कि विदेशों में हमारे देश से स्थिति भिन्न है । यहाँ इस रोग का उपचार करने के लिए विशेषज्ञों की संख्या बढ़ेयह बहुत आवश्यक है। डॉ. पंकज शाह की पुस्तक में यह जिक्र किया गया है की हमारे देश में १०००० से १५००० किडनी विशेषज्ञों की जरूरत है जबकी देश में सिर्फ १००० से १२०० किडनी विशेषज्ञ उपलब्ध है । यह हमारे लिये चिंता की बात है। हमें इसका कोई न कोई हल निकालना चाहिये। दूसरी बात यह है की देश में प्रतिवर्ष १.५ लाख किडनी की जरूरत पड़ती है जिसकी तुलना में बहुत कम मात्रा में किडनीयां उपलब्ध है।
- इस पुस्तक में किडनी रोग के संबंध में जटिल से जटिल टेकनीकल बातें भी आम व्यक्ति भी समझ सके ऐसी सरल और सुबोध शैली में लिखी गई हैं। यह पुस्तक मैंने भी पढ़ी है। जब इस पुस्तक को पढ़ने के लिये मैंने हाथ में लिया तो मुझे भी लगा था कि इसमें बहुत सी बातें ऐसी होंगी जो मेरी समझ से बाहर होंगी। मगर जब मैंने पूरी पुस्तक पढ़ी तब मुझे लगा कि यह तो बहुत ही सरल शैली में लिखी गई पुस्तक हैं । इसके लिये मैं लेखिका को निश्चितरूप से बधाई देना चाहूँगा।
- जब किसी रोग के बारे में हमें ठीक जानकारी नहीं होती है तब हमारे मन में कई सवाल उठते है । "Dialysis" और "Kidney Transplantation" ये शब्द मैंने भी सुने थे। मगर "Dialysis" तथा "Kidney-

Transplantation" के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थी । "Dialysis"कराने के बाद "Kidney Transplantation" की जरूरत रहती है की नहीं ऐसे भी सवालमन में उठते थे । मगर डॉ. पंकज शाह साहब पर लिखी गई इस पुस्तक में ये आवश्यक जानकारियां बहुत ही सरल भाषा में उपलब्ध है और ये इस पुस्तक का उल्लेखनीय पहलू है ।

- डॉ. पंकज शाह की यह पुस्तक हम सभी को पढ़नी चाहिये और इसमें जिन-जिन बातों का जिक्र किया गया है उन बातों का महत्व हमें समझना चाहिये । किडनी रोग के लक्षणों को पहचानकर हमारी जीवन शैली में भी हमें जरूरी परिवर्तन लाने चाहिये । मैं तो यहाँ तक कहना चाहूँगा कि स्कूलों के अभ्यासक्रमों में भी एक दो पाठ ऐसे रोगों की प्राथमिक जानकारी के होने चाहिएं । इस दिशा में यदी हमारा शिक्षा विभाग कुछ करेगा तो मैं समझता हूँ कि बहुत अच्छा काम होगा ।
- इन्हीं शब्दों के साथ, मैं डॉ. पंकज शाह के अधिक उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुये उन्हेंबहुत-बहुत बधाई देता हूँ । एक पंक्ति हैं - दु:ख देवत दु:ख होत है, सुख देवत सुख होत ।" जिसका अर्थ है कि दु:ख देने से दु:ख होता है और सुख देने से सुख होता है । मैं इतना ही कहूँगा कि डॉ. पंकज शाह साहब अपने मरीज़ों को सुख देते रहे और स्वयं भी सुखी रहे । बहुत-बहुत शुभकामनाएं ।